समंदर की बेटी लेफ्टिनेंट किरण शेखावत की कहानी

सारिका शर्मा*

मैं राजस्थान की रेत की कोख से जन्मी,
समंदर की लहर बन, फिर चट्टानों से टकराऊंगी,
मैं एक फौजी का अंश,
बिन डरे फिर तूफानों के समक्ष खड़ी होजाऊंगी,
मैं हरियाणा की वीर वधू,
आसमान में फिर पंछी बन गोते लगाऊंगी,
मैं एक वीर अर्धांगिनी,
साथ न होकर भी सात वचन निभाऊंगी,
मैं मेरी माँ की छोटी सी गुड़िया,
फिर छोटे कदमों से बड़े शिखर चढ़ जाऊंगी,
मैं इस देश की बहादुर बिटिया,
इतिहास के कोरे पन्नों पर लेफ्टिनेंट किरण शेखावत के नाम से जानी जाऊंगी।

लेफ्टिनेंट किरण शेखावत का जन्म 1 मई 1988 को मुंबई के एक फौजी परिवार में हुआ। राजस्थान के झुंझुनू जिले के सेफ्रागुवार गांव से किरण के पिताजी श्री विजेंद्र सिंह शेखावत भी भारतीय नौसेना का हिस्सा रह चुके हैं और वह माननीय सब लेफ्टिनेंट की पदवी से रिटायर हुए। नौसैनिक पिता की पोस्टिंग होने के कारण किरण ने अपनी स्कूली शिक्षा विशाखापत्तनम व देश के अन्य केंद्रीय विद्यालयों से पूरी की। घर से दूर रहने के कारण उनकी और उनके भाई की परवरिश उनकी माता जी श्रीमती मधु चौहान ने की। किरण की जिंदगी में पहला दिलचस्प मोड़ तब आया जब उनके पिता जी की पोस्टिंग जापान में हुई। वहाँ बीते साढ़े तीन साल में उन्होंने जापान अंतरराष्ट्रीय स्कूल से अपनी पढ़ाई की और इसी दौरान उनकी जापानी भाषा पर अच्छी पकड़ बनी। बचपन से ही किरण एक मेधावी छात्रा रही और एक्स्ट्रा करिकुलर एक्टिविटीज में भी बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेती थीं। उन्हें आस पड़ोस के बच्चों को पढ़ाना भी अच्छा लगता था। जापान में ही उन्होंने डायरी राइटिंग भी शुरू की थी।

किरण की पहली नौकरी एचएसबीसी में बतौर कस्टमर सर्विस एक्जीक्यूटिव लगी। उन्हें अपनी नौकरी से बहुत प्यार था और 2008 में बेस्ट कस्टमर सर्विस एक्जीक्यूटिव रहने के लिए उन्हें प्रोत्साहन स्वरूप 1 लाख रुपये धनराशि भी मिली। वह

* छात्रा,
श्री वेंकटेश्वरा कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय।

अपने काम से बहुत संतुष्ट थी, पर साहब होता तो वही है जो किस्मत में लिखा होता है।

किरण भारतीय नौसेना की ओर खींची चली गई और उन्होंने जी-जान लगाके एसएसबी (**SSB**) के लिए मेहनत की और ये मेहनत बखुबी रंग लायी जब वह अपने पहले ही प्रयास में सफल हुई। किरण एक काबिल कैडेट थी, हर एक्टिविटी, स्पोर्ट्स में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया करतीं और अपना 100 परसेंट दिया करती थीं। किसे पता था कि ये बिटिया अपने पिता की तरह ही बहादुर बनेगी और उनकी तरह ही नौसेना में भर्ती भी होगी।

पिताजी श्री विजेंद्र सिंह शेखावत एक अनुभव बताते हैं- ''सेवा चयन बोर्ड (एसएसबी) को पास करने और भारतीय नौसेना में शामिल होने के लिए चुने जाने के बाद उनके बारे में मेरी धारणा बदलने लगी। उसके प्रारंभिक प्रशिक्षण के दौरान, मैं उसके कठिन प्रशिक्षण कार्यक्रम के बारे में चिंतित था और सोचता था कि वह इससे कैसे निपटेगी। लेकिन जब वह अपनी ट्रेनिंग से लौटी और मैं उसका सामान ले जाने के लिए रेलवे स्टेशन पर एक कुली की तलाश कर रहा था, तो वह कुछ ही समय में चार बैग के साथ तैयार हो गई और बिना किसी मदद की प्रतीक्षा किए 'चलो' कहा। उसकी मुस्कान के साथ उसके आत्मविश्वास ने मुझे गर्व और खुशी से भर दिया।''

उनके पिता बताते हैं कि ''उनकी पहली पोस्टिंग के दौरान, मैं उनके कमांडिंग ऑफिसर से मिला, जिन्होंने उनकी प्रशंसा की और मुझसे कहा, ''आपकी बेटी पेशेवर रूप से बहुत सक्षम है और अपने समकालीनों से काफी ऊपर है।'' मेरी आंखों में खुशी के आंसू आ गए और मैंने किरण जैसी बेटी के साथ मुझे आशीर्वाद देने के लिए भगवान् का शुक्रिया अदा किया। मुझे उस दिन एहसास हुआ कि वह जीवन में बड़ी चीजों के लिए बनी है।

5 जुलाई 2010 का दिन श्री विजेंदर सिंह शेखावत व श्रीमती मधु चौहान के लिए बहुत गौरांवित पल था जब उनकी किरण अब लेफ्टिनेंट किरण शेखावत बन गई थी। किरण शेखावत को महज 22 साल की उमर में भारतीय नौसेना की कार्यकारी शाखा के विमान कैडर में कमीशन प्राप्त हुआ। उनके परिवार के लिए यह बेहद गौरव की बात थी क्योंकि वह अपने परिवार में से सरकारी नौकरी पाने वाली और भारतीय सेना में शामिल होने वाली पहली बिटिया बनी।

10 फरवरी, 2012 को अपना प्रशिक्षण पूरा करने के बाद लेफ्टिनेंट किरण ने विशाखापत्तनम में आईएनएस 311, और गोवा में आईएनएस 310, आईएनएस हंसा के स्टाफ ऑब्जर्वर के रूप में दो ऑपरेशनल कार्यकल पूरे किए। इसके बाद लेफ्टिनेंट किरण विवाह के बंधन में बंधी लेकिन बावजूद इसके उन्होंने एक काबिल अफसर, कुल वधू व बेटी के कर्तव्यों को बखुबी निभाया। लेफ्टिनेंट किरण हमेशा अपने मिशन की तैयारी पहले से ही कर लिया करतीं थी। लेफ्टिनेंट शेखावत ने भारतीय नौसेना की अन्य महिला अधिकारियों की अपेक्षा में सबसे अधिक 750 घंटे सफल विमान उड़ान का अनुभव भी प्राप्त किया। उन्हें भारतीय नौसेना की लौह महिला (**Iron Lady**) भी कहा जाता है।

2015 की गणतंत्र दिवस परेड की तैयारी के लिए वह सुबह 3 बजे उठ जाती और 12 किमी की ड्रिल करती। 2015 की गणतंत्र दिवस परेड पर पहली बार जब भारतीय नौसेना का महिला दस्ता उतरा तो उसमें लेफ्टिनेंट किरण शेखावत भी मौजूद थी, मानो हर एक कदम के साथ उनका सपना सच हो रहा था। किरण ने सिंगापुर-भारतीय समुद्री द्विपक्षी अभ्यास में भारतीय नौसेना का नेतृत्व भी किया था। 24 मार्च 2015 को हमने यह सितारा खोया जिसकी वीरता का किस्सा सुन हर हिंदुस्तानी रोया। 24 मार्च की रात लेफ्टिनेंट शेखावत व उनके दो सह पायलट डोर्नियर 228 में गश्त पर थे, उस दिन लेफ्टिनेंट शेखावत की ड्यूटी नहीं थी, फिर भी अपने कर्तव्य से कभी पीछे न हटने वाली लेफ्टिनेंट शेखावत ने उड़ान पर जाने का फैसला किया। उनका विमान गोवा के नजदीक अरब महासागर में दुर्घटनाग्रस्त हो गया। लेफ्टिनेंट किरण शेखावत ऑफ ड्यूटी में वीरगति को प्राप्त होने वाली नौसेना की पहली महिला भारतीय अधिकारी बनी।

किरण के पिताजी कहते हैं ''मेरी बेटी किरण को वीरगति को प्राप्त हुए सात साल हो गए हैं, लेकिन वह अभी भी हमारे जीवन में चमकती है, उसके नाम 'किरण' का अर्थ 'रोशनी' है और हमारे घर को रोशन करती है। बचपन से ही वह बहुत हंसमुख स्वभाव की थी, लेकिन अंदर से एक सैनिक की दृढ़ता और कठोरता भी थी। किरण की कहानी से यह प्रेरणा मिलती है- माता-पिता को अपनी बेटियों की क्षमताओं को कभी कम नहीं आंकना चाहिए, क्योंकि उन्हें सही मार्गदर्शन और समर्थन दिया जाए तो वह भी 'किरण' की तरह चमकते सितारे और देश का गौरव बन सकते हैं।

उनकी अत्यधिक प्रतिबद्धता और समर्पण का सम्मान करते हुए, परिवार ने मार्च 2016 में ''लेफ्टिनेंट किरण शेखावत फाउंडेशन'' का गठन किया जिसका लक्ष्य समाज के कमजोर वर्ग के लिए काम करना और समय-समय पर देश के लिए कार्यक्रम आयोजित करना है ताकि यह युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणा का काम कर सके और वह भी उसी जुनून, भक्ति और समर्पण के साथ अपने देश की सेवा करें। यह आयोजन भारत के युवाओं के लिए सशस्त्र बलों में शामिल होने और राष्ट्र की सेवा करने के लिए एक प्रेरणा सिद्ध होगा। साथ ही समय-समय पर 'स्वच्छ भारत मिशन' और पर्यावरण हितैषी गतिविधियों से संबंधित गतिविधियां भी संचालित की जाती हैं।

नौसेना में जन्मी, नौसेना में शामिल हुई, नौसेना में शादी की और नौसेना के लिए अपना जीवन दिया, उनका जीवन भारतीय नौसेना के बारे में ही था।

समंदर की कोख में ही तो खेली मैं, अब समंदर की कोख में ही समा गई,
माँ पापा आपकी बहादुर बेटी तिरंगे को गले लगा कर वापस आई।

तो कुछ ऐसी थी लेफ्टिनेंट किरण शेखावत की कहानी।

❐❐❐❐

ISSN 2581-9917

Reviewer Speaks

Lt Kiran Shekhawat's life is indeed an excellent inspiration for the young ladies of this nation. Through her grit and determination, Lt Kiran Shekhawat has inscribed her name in golden letters in annals of bravery of Indian Navy, by giving the supreme sacrifice for the nation.

Lt Kiran Shekhawat , before joining Indian Navy , was a successful banker at the renowned HSBC bank but the call of duty forced her to quit her cushy job and follow the footsteps of her father , in service of nation, in the true spirit of Armed Forces culture wherein most the children raised in a frugal yet royal environment of Armed Forces, are exposed to a regal culture , not available anywhere else and amongst all the ceremonials , discipline , comradeship and bonhomie, they realise that death lurks at every corner and these children learn to embrace death as a matter of fact , in the line of duty , in service of the nation. They grow with the motto "Country first, always, forever", making a career in the Armed Forces, their first choice.

The author, Miss Sarika Sharma is worthy of the highest compliments as she has very stimulatingly and with elan told the story of brave Lt Kiran Shekhawat and captured the essence of the strength of her character which epitomizes the highest standards of values and ethics of the the Armed Forces of India. Her narration will definitely hit the right cord in many young ladies of this nation, motivating them to come forward to serve their motherland. ❑❑❑

Col. RNG Dastidar

Freelance Journalist